प्रश्न पत्र ब्लूप्रिन्ट
BLUE PRINT OF QUESTION PAPER

कक्षा : XII — पूर्णांक :100

विषय : इतिहास — समय : 3 घंटे

क्रं.	पाठ्यक्रमानुसार इकाईयां	इकाई पर आवंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न खण्ड (अ)	अंकवार प्रश्नों की संख्या (खण्ड ब)			कुल प्रश्न
			1 अंक	4 अंक	5 अंक	6 अंक	
1.	प्रागैतिहासिक युग एवं प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के स्त्रोत	08	3	—	1	—	1
2.	सरस्वती सिंधु (हड़प्पा संस्कृति एवं बैदिक युग)	08	4	1	—	—	1
3.	प्रमुख प्राचीन भारतीय राजवंश	08	—	2	—	—	2
4.	उत्तर एवं दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश	08	4	1	—	—	1
5.	दिल्ली सल्तनत	08	3	—	1	—	1
6.	मुगल काल	10	1	1	1	—	2
7.	मराठा शक्ति का राज्य	10	1	1	1	—	2
8.	भारत में अंग्रेजी राज्य	10	—	1	—	1	2
9.	अंग्रेज शासन का प्रतिरोध	10	—	—	2	—	2
10.	राष्ट्रीय आंदोलन	10	4	—	—	1	1
11.	मध्यप्रदेश एक परिचय (ऐतिहासिक परिवेश में)	10	5	—	1	—	1
	योग	**100**	**25 = (5)**	**07**	**07**	**02**	**16+ 5 = 21**

निर्देशः— वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रश्नपत्र के आरंभ में दिये जायेंगे।

1. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिसके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, एक शब्द में उत्तर, मेचिंग, सही विकल्प तथा सत्य–असत्य का चयन आदि के प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न में 1 X 5 अंक निर्धारित है।

2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में विकल्प का प्रावधान रखा जाये। यह विकल्प समान इकाई से तथा यथा संभव समान कठिनाई स्तर वाले होने चाहिए।
3. कठिनाई स्तर – 40ः सरल प्रश्न, 45ः सामान्य प्रश्न, 15ः कठिन प्रश्न।

प्रादर्श प्रश्न पत्र
विषय – इतिहास
कक्षा – 12वीं

समयः 3 घंटे **पूर्णांकः 100**

<u>निर्देशः–</u>

(i) सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
(ii) प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए गए है।
(iii) प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक प्रत्येक के उत्तर 50 शब्दों में दीजिए।
(iv) प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक प्रत्येक के उत्तर 100 शब्दों में दीजिए।
(v) प्रश्न क्रमांक 20 से 21 के प्रत्येक के उत्तर 120 शब्दो में दीजिए।
(vi) प्रत्येक प्रश्न के समक्ष उनके निर्धारित अंक दर्शाए गए है।

प्रश्न 1. जोड़ी बनाओं– **5**

(अ)	राजशेखर	–	तंजौर का वृहदीश्वर मंदिर
(ब)	मिहिर भोज	–	रक्त एवं लौह नीति
(स)	महेन्द्र वर्मन	–	कर्पूर मंजरी
(द)	राजराज प्रथम	–	गुर्जर प्रतिहार वंश
(इ)	बलबन	–	मत्तविलास प्रहसन

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए। **5**

(अ) होमोसैपियन्स एक लैटिन शब्द है, जिसका अर्थ ....होता है।
(ब) गदर पार्टी की स्थापना ....ने की थी।
(स) 'मराठा व केसरी' समाचार पत्रों का प्रकाशन .... ने किया।
(द) जबलपुर के .... नामक स्थान से अशोक के शिलालेख प्राप्त हुए है।
(इ) कन्दरिया महादेव मंदिर का निर्माण .... वंश के राजा ने कराया था।

प्रश्न 3. एक वाक्य या एक शब्द में उत्तर दीजिए। **5**

(अ) पहिए का आविष्कार किस काल में हुआ?
(ब) चतुर्थ बौद्ध संगीति किस शासक के काल में और कहां हुई थी?
(स) पंच महाव्रत का संबंध किस धर्म से है?
(द) 'किताब–उर–रहला' के लेखक का नाम लिखिए?
(इ) मुगलकाल में सम्राट द्वारा प्रदत्त भूमिकर मुक्त क्षेत्र को क्या कहा जाता था?

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य–असत्य बताइए। **5**

(अ) हड़प्पा संस्कृति ताम्र–कांस्य युगीन सभ्यता थी।
(ब) शिवाजी की पैदल सेना पायक कहलाती थी।
(स) गांधी इरबिन समझौता अप्रैल 1932 में हुआ था।

(द) विदिशा को प्राचीनकाल में माहिष्मती नाम से जाना जाता था।

(इ) मंदसौर के इन्द्रगढ़ से राष्ट्रकूट शासक नन्नप का एक शिलालेख प्राप्त हुआ है।

प्रश्न 5. दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर छांटकर लिखिए। **5**

(अ) जातक कथाएं सम्बन्धित है –

(i) महावीर स्वामी के पुनर्जन्म से (ii) हर्षवर्द्धन के जीवन से
(iii) सम्राट अशोक के जीवन से (iv) गौतम बुद्ध के पुनर्जन्म से

(ब) वैदिक काल में गाय के अतिरिक्त विनिमय का अन्य साधन था –

(i) बैल (ii) अश्व
(iii) निष्क (iv) स्वर्ण

(स) सूफी सम्प्रदायों में से भारत में कौन सा सम्प्रदाय लोकप्रिय था –

(i) चिश्ती (ii) सुहरावर्दी
(iii) कादरिया (iv) नक्शबन्दिया

(द) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारंभिक उद्देश्यों में से नहीं था –

(iii) राष्ट्र के हितों की रक्षा हेतु तत्पर भारतीयों से सम्पर्क कर मित्रता बढ़ाना।
(ii) राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रचार–प्रसार करना।
(iii) आगामी वर्षो के राजनीतिक कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित करना।
(iv) भारत को स्वतंत्र करने हेतु प्रयास करना।

(इ) सतना जिले में स्थित भूमरा का शिव मंदिर इस काल की वास्तुकला का अनुपम नमूना है –

(i) शुंग काल (ii) मौर्य काल
(iii) गुप्त काल (iv) कुषाण काल

प्रश्न 6. सिन्धु सभ्यता की नगर निर्माण योजना का संक्षिप्त परिचय दीजिए। **4**

अथवा

वैदिक कालीन वर्णाश्रम व्यवस्था को समझाइए।

प्रश्न 7. ''हर्ष में अशोक तथा समुद्रगुप्त दोनों के गुणों का समावेश था'' समझाइए। **4**

अथवा

गांधार शैली पर एक टिप्पणी लिखिए।

प्रश्न 8. गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग क्यों कहते है? **4**

अथवा

अशोक के 'धम्म' के विषय में आप क्या जानते है?

प्रश्न 9. चोलकालीन प्रशासन को संक्षेप में समझाइए। **4**

अथवा

परमार राजा भोज का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

प्रश्न 10. मुगलकालीन मनसबदारी व्यवस्था का संक्षिप्त परिचर दीजिए। 4

अथवा

महाराणा प्रताप ने किस प्रकार मुगलों का प्रतिरोध किया? वर्णन कीजिए।

प्रश्न 11. शिवाजी की अष्ट–प्रधान व्यवस्था को समझाइए। 4

अथवा

चौथ और सरदेश मुखी से क्या तात्पर्य है? समझाइए।

प्रश्न 12. भारत में पुर्तगाली शक्ति के पतन के प्रमुख कारणों की व्याख्या कीजिए। 4

अथवा

इलाहबाद की संधि की शर्तो का उल्लेख करते हुए संधि के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 13. पुरापाषाण काल व नवपाषाण काल के मध्य अन्तर स्पष्ट कीजिए। 5

अथवा

प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने में पुरातात्विक स्त्रोतों का क्या योगदान है? वर्णन कीजिए।

प्रश्न 14. अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण नीति की व्याख्या कीजिए। 5

अथवा

भारतीय इतिहास में विजय नगर साम्राज्य की देन को समझाइए।

प्रश्न 15. 'दीन–ए–इलाही' के विषय में आप क्या जानते है? समझाइए। 5

अथवा

औरंगजेब की दक्षिण नीति के परिणामों की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 16. मराठों के उत्कर्ष के कारणों की व्याख्या कीजिए। 5

अथवा

शिवाजी के चरित्र व कार्यो का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न 17. 1757 ई. से 1857 ई. के मध्य अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत भारत में अपनाई गई विभिन्न भू–राजस्व प्रणालियों का सामान्य परिचय दीजिए। 5

अथवा

आधुनिक काल में भारतीय पुनर्जागरण के पांच प्रमुख कारणों का वर्णन करों।

प्रश्न 18. सन् 1857 ई. की क्रांति के स्वरूप को सविस्तार समझाइए। 5

अथवा

सन् 1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम की असफलता के कारणों की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 19. मध्यप्रदेश की पाषाण युगीन सभ्यता का संक्षेप में वर्णन कीजिए। **5**

अथवा

मध्यप्रदेश का राष्ट्रीय आंदोलन में क्या योगदान रहा? संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न 20. आधुनिक भारतीय इतिहास जानने के प्रमुख साहित्यिक स्त्रोतों का वर्णन कीजिए। **6**

अथवा

''बक्सर के युद्ध ने प्लासी के अपूर्ण कार्य को पूरा किया'' इस कथन की विवचेना कीजिए।

प्रश्न 21. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में उग्रवादी विचारधारा का जन्म क्यों और कैसे हुआ? वर्णन कीजिए।

अथवा

असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए बताइए कि यह आन्दोलन अचानक क्यों स्थिगित कर दिया गया? **6**

————————

आदर्श उत्तर
विषय – इतिहास
कक्षा – 12वीं

उत्तर 1. (अ) राजशेखर – कर्पूर मंजरी
(ब) मिहिर भोज – गुर्जर प्रतिहार वंश
(स) महेन्द्र वर्मन – मत्तविलास प्रहसन
(द) राजराज प्रथम – तंजौर का वृहदीश्वर मंदिर
(इ) बलबन – रक्त एवं लौह की नीति

उत्तर 2. (अ) बुद्धिमान मानव
(ब) लाला हरदयाल
(स) बालगंगाधर तिलक
(द) रूपनाथ
(इ) चंदेल

उत्तर 3. (अ) नवपाषाण काल
(ब) कनिष्क, काश्मीर के कुण्डल वन में
(स) जैन धर्म से
(द) इब्नबतूता
(इ) मदद–ए–माश

उत्तर 4. (अ) सत्य
(ब) सत्य
(स) असत्य
(द) असत्य
(इ) सत्य

उत्तर 5. (अ) गौतमबुद्ध के पुनर्जन्म से
(ब) निष्क
(स) चिश्ती
(द) भारत को स्वतंत्र करने हेतु प्रयास करना
(इ) गुप्तकाल

उत्तर 6. सिंधु सभ्यता नगरीय सभ्यता थी। इस सभ्यता के प्रमुख नगरों हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, लोथल आदि से नगर योजना की जानकारी होती है। नगर 5 कि.मी. के घेरे में फैले हुए थे। सड़के वैज्ञानिक ढंग से बनी थी साथ ही छोटी–छोटी गलियां भी थी। इनके किनारे भवन,नालियां योजना बद्ध तरीके से बने थे। जल निकासी की उत्तम व्यवस्था थी। छोटी नालियां सड़क किनारे की बड़ी नालियों में बड़ी नालियां शहर के बाहर नाले में मिलती थी। भवनों को

बनाते समय हवा व प्रकाश का पूर्ण ध्यान रखा जाता था। भवनों में एक से ज्यादा मंजिले होती थी। साधारण भवनों के अतिरिक्त सार्वजनिक एवं राजकीय भवन भी थे। मोहनजोदड़ो का सार्वजनिक स्नानागार, हडप्पा का स्नानागार मोहनजोदड़ो से प्राप्त विशाल भवन इसी श्रेणी में आते है। सफाई की व्यवस्था उच्च कोटि की थी। सड़क किनारे कचरा रखने के बड़े बर्तन होते थे। नालियां भूमिगत होती थी।

अथवा

आर्यो की वर्णाश्रम व्यवस्था अद्भूत थी। वैदिक युगीन जीवन वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित था। आर्यो ने अपने समाज और जीवन को चार भागों में विभाजित कर रखा था जो वर्ण और आश्रम कहलाते थे। वर्ण कर्म पर आधारित थे। वैदिक समाज कर्म के आधार पर ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र वर्णो में बंटा था। सभी अपने निर्धारित कर्म करते हुए समाज में सुव्यवस्था बनाए रखते थे।

आर्यो ने अपने जीवन को 100 वर्ष का मानकर 25–25 वर्ष के चार भागों में विभाजित किया था यही आश्रम कहलाते थे। चार आश्रम थे– ब्रम्हचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास। पहले आश्रम में शिक्षा, दूसरे में सांसारिक कर्तव्यों का निर्वहन, तीसरे में समाज में रहकर धर्म का पालन, चौथे में सब त्यागकर आध्यात्मिक ज्ञान की तलाश में वनों में गमन करते थे।

उत्तर 7. हर्ष ने अशोक की तरह बौद्ध धर्म ग्रहण किया। बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए उसने अशोक की तरह ही प्रयास किए। उसने अपना जीवन भी अशोक की तरह बौद्ध धर्म की उन्नति अपनी प्रजा के कल्याण हेतु समर्पित किया। किन्तु दूसरी ओर उसने समुद्र गुप्त की तरह विजय यात्राएं भी की। संपूर्ण उत्तरी भारत को एकता के सूत्र में बांध दिया। समुद्रगुप्त की तरह भारत को विदेशी आक्रमण से मुक्त रखा। वह एक महान विजेता, कुशल प्रशासक, धर्म परायण, दानी, विद्यानुरागी सम्राट था। इसलिए उसे अशोक और समुद्रगुप्त का समन्वय कहा गया है।

अथवा

कुषाण सम्राट कनिष्क के शासनकाल में मूर्तिकला की अभूतपूर्व उन्नति हुई। बौद्ध धर्म की महायान शाखा के अन्तर्गत गौतम बुद्ध की मूर्तियां गांधार प्रदेश में निर्मित हुई। मूर्तियों का निर्माण गांधार प्रदेश में होने से गांधार कला के नाम से जाना गया। इस कला के विषय भारतीय है तकनीक यूनानी है। महात्मा बुद्ध की जीवन लीला, जातक कथाओं का अंकन करते समय शिल्पियों ने यूनानी कला के प्रभाव और अलंकरण का उपयोग किया है।

1. मानव शरीर की सुन्दर रचना।
2. पारदर्शी वस्त्र, सलवटें सजीव है।
3. मूर्तियां प्रायः स्लेटी पत्थर की है।
4. बुद्ध की मूर्तियां यूनानी देवता अपोलो की तरह दिखाई देती है।

उत्तर 8. इतिहास में किसी काल को स्वर्ण युग कहने का अर्थ होता है कि उस काल में देश में चहुमुखी उन्नति हुई हो। देश विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित रहा हो प्रजा सुखी व समृद्ध रही हो। गुप्तकाल इन सभी मानदण्डों को पूरा करने के कारण

स्वर्ण युग कहलाने का अधिकारी है। निम्नलिखित बिन्दुओं से इसे स्पष्ट किया जा सकता हैः–

1. महान सम्राटों का युग।
2. राजनैतिक एकता का युग।
3. आर्थिक उन्नति।
4. धार्मिक सहिष्णुता का युग।
5. आदर्श सामाजिक जीवन।
6. वैज्ञानिक उन्नति।
7. साहित्यिक उन्नति।
8. कलाओं का अभूतपूर्व विकास।
9. शांति समृद्धि।
10. विदेशों से शांतिपूर्ण सम्बन्ध। (उक्त बिन्दुओं का पृथक–पृथक विवरण)

अथवा

अशोक ने अपनी प्रजा के कल्याणार्थ जिन आचार–विचारों को प्रस्तुत किया था वही अशोक का 'धम्म' कहलाता है। उसका व्यक्तिगत धर्म बौद्ध था किन्तु उसने अपने धर्म को किसी पर आरोपित करने का प्रयास नहीं किया। उसने अपनी प्रजा के नैतिक तथा आध्यात्मिक स्तर को उन्नत करने हेतु प्रयास किया। उसके धर्म के दो पहलू थे व्यावहारिक व निषेधात्मक।

गुरूजनों, बड़ो का आदर, सम्मान, आज्ञा पालन, सभी से उदारता का व्यवहार, प्राणिमात्र के प्रति दया भावना, बलिप्रथा का निषेध, सेवा भावना, सत्य का पालन, सहिष्णुता उसके धर्म का व्यावहारिक पक्ष है तो उग्रता, निष्ठुरता, क्रोध, अहंकार व ईर्ष्या का त्याग उसके धर्म का निषेधात्मक पक्ष है।

सार्वभौमिकता, पवित्रता, नैतिकता, अहिंसा पर बल, उदारता, सहिष्णुता, लोक कल्याण, दिखावे का अभाव उसके धर्म की विशेषताएं है।

उत्तर 9. दक्षिण भारत के चोल शासक महान विजयों के साथ अपने श्रेष्ठ प्रशासन के लिए भी जाने जाते है। उनके प्रशासन को निम्न बिंदुओं के आधार पर समझ सकते है।

1. राजा – संपूर्ण शक्तियों से युक्त।
2. सेना – तीन अंग– गज, अश्व, पैदल सेना। शक्तिशाली नौ सेना भी थी।
3. प्रान्तीय शासन – प्रान्त मण्डलम कहलाते थे। मण्डलम बलन या नाडु में विभक्त।
4. यातायात व्यवस्था उत्तम थी।
5. राजस्व व्यवस्था।
6. कृषि व्यवस्था।
7. स्थानीय शासन – स्वशासन की स्थापना चोल प्रशासन की मुख्य विशेषता थी। दो समितियों के द्वारा शासन संचालन – 1. उर या सभा 2. महा सभा उर ग्राम की सामान्य समिति थी। महासभा ग्राम के विशिष्ट जनों की सभा होती थी।
8. उत्तम न्याय व्यवस्था। (उक्त सभी का संक्षेप में परिचय अपेक्षित)

अथवा

परमार नरेश भोज सिन्धुराज के बाद सिंहासनारूढ़ हुआ। यह इस वंश का सबसे पराक्रमी एवं कीर्तिवान सम्राट था। उसने अपने समकालीन अनेक राजाओं को पराजित किया और परमार वंश की प्रतिष्ठा कायम की। वह केवल योद्धा ही नहीं वरन उच्च कोटि का विद्धान तथा कला मर्मज्ञ था। उसने विद्या एवं साहित्य की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। उसके दरबार में अनेक विद्वान आश्रय पाते थे उसने विभिन्न विषयों पर अनेक ग्रन्थ लिखे जिनमें से समरांगण सूत्रधार एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। उसने धारा नगरी में एक विद्यालय की स्थापना की जहां दूर–दूर से विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। उसने भोजपुर नामक नवीन नगर बसाया। वर्तमान भोपाल की बड़ी झील भोज ने ही बनवाई थी। सांस्कृतिक दृष्टि से भोज के शासनकाल का विशेष महत्व है।

प्रश्न 10. मनसब दारी प्रथा मुगल प्रशासन तथा सैनिक संगठन का प्रमुख आधार थी। अकबर ने इस प्रथा को भारत में चलाया। मनसब से तात्पर्य है पद अथवा प्रतिष्ठा। सबसे छोटा मनसब 10 सैनिकों का होता था। जात या सवार की संख्या के आधार पर मनसब बड़े या छोटे माने जाते थे। पांच हजार से उपर की संख्या वाले मनसब मुगल राजवंश के राजकुमारों को ही दिए जाते थे। राज्य का सर्वोच्च मनसबदार अमीर–उल–उमरा कहलाता था। मनसब दारी प्रथा ने मुगल साम्राज्य को सुदृढ़ बनाने में अभूत पूर्व सहयोग दिया। किन्तु इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि जब मुगल शासक कमजोर हो गए तो राष्ट्रीय अखण्डता को नष्ट करने में मनसबदार सबसे आगे थे।

अथवा

सिसोदिया वंशी महाराणा प्रताप ने आजीवन अकबर की अधीनता का प्रतिरोध किया। महाराणा प्रताप 1572 ई. में राजा उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात सिंहाससीन हुए। उन्होनें चित्तौड़ को स्वतन्त्र कराने की शपथ ली थी और आजीवन उसका पालन किया। वे तेजस्वी, पराक्रमी और स्वतंत्रता प्रेमी पुरूष थे। उनके पास न तो संगठित राज्य था और न ही शक्तिशाली सेना फिर भी उन्होने सदैव मुगलों को टक्कर दी। 18 जून 1576 को राणा प्रताप और अकबर की सेना के मध्य हल्दी घाटी के मैदान में युद्ध प्रारंभ हुआ। 21 जून को हुए युद्ध के प्रारंभ में राजपूत सेना ने मुगलों को कड़ी टक्कर दी, परन्तु मुगल सेना की विशालता के कारण अन्ततः पराजय का सामना करना पड़ा। महाराणा प्रताप को युद्ध क्षेत्र छोड़ना पड़ा। वे अरावली पहाड़ियों की ओर चले गए और वहीं से संघर्ष चलाते रहें। अन्त तक उन्होने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। धीरे–धीरे उन्होने अपने राज्य के अधिकांश भाग पर पुनः अधिकार कर लिया था। अपने स्वतंत्रता प्रेम, स्वाभिमान के लिये वे भारतीय इतिहास में नक्षत्र की तरह दैदीव्यमान है।

उत्तर 11. अष्ट प्रधान व्यवस्था शिवाजी की शासन व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्तम्भ थी। शिवाजी को सलाह देने के लिए जो मंत्री परिषद थी उसमें कुल आठ मंत्री थे यही अष्टप्रधान कहलाते थे। इन्हें शिवाजी स्वयं नियुक्त करते थे। अपने–अपने

विभाग के कार्यो का सुचारू रूप से संचालन इनका दायित्व था। शिवाजी की अष्ट प्रधान व्यवस्था में निम्नलिखित मंत्री होते थेः–

1. पेशवा (प्रधानमंत्री)
2. आमात्य (अर्थ विभाग का प्रधान)
3. मंत्री (गृह प्रबंध, दरबारी की कार्यवाही का विवरण)
4. सचिव (राजकीय पत्र व्यवहार)
5. सुमन्त (विदेश मंत्री)
6. सेनापति (सैन्य अधिकारी)
7. पण्डितराव (धर्म व दान विभाग)
8. न्यायाधीश (न्याय विभाग)
   (कार्यो का संक्षिप्त परिचय भी अपेक्षित)

अथवा

चौध और सरदेशमुखी मराठों की आय के प्रमुख साधन थे। चौध भूमिकर का चतुर्थांश होता था। विजित प्रदेशों से शिवाजी व बाद के मराठा शासक चौथ वसूलते थे। सरदेशमुखी उपज का दसवां हिस्सा होता था जो पूरे राज्य से वसूल किया जाता था। (और वर्णन अपेक्षित है)

उत्तर 12. भारत में पुर्तगालियों के पतन के निम्नलिखित कारण थे–

1. अनुशासन हीनता।
2. अल्बुकर्क के अयोग्य उत्तराधिकारी।
3. धार्मिक असहिष्णुता।
4. व्यापारिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अनुचित कार्य।
5. ब्राजील की ओर ध्यान।
6. अन्य यूरोप शक्तियों से प्रतिद्वन्द्विता इत्यादि।
   (बिन्दुवार वर्ण्न अपेक्षित)

अथवा

बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों ने मीरकासिम, शाहआलम और अवध के नवाब शुजादउदौला को संयुक्त रूप से पराजित किया। इसके बाद उन्होने मुगल सम्राट शाहआलम और अवध के नवाब से इलाहबाद की संधि की जिसकी प्रमुख शर्ते इस प्रकार थी–

1. कड़ा– इलाहबाद के जिलों को छोड़ शेष अवध नवाब को सौंप दिया गया।
2. अंग्रेजी सेना अवध में रहेगी जिसका व्यय नवाब वहन करेगा।
3. कम्पनी की बिना कर दिए व्यापार करने की छूट।
4. नवाब 50 लाख रूपये क्षतिपूर्ति के रूप में कम्पनी को देगा।
5. कड़ा– इलाहबाद के जिले मुगल सम्राट को दिए गए।
6. मुगल सम्राट की पेंशन 26 लाख रूपये निश्चित हुई।
7. अंग्रेजो की बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई।

इस संधि से अंग्रेजो की स्थिति सुदृढ़ हो गई जो उन्हें चाहिए था वह सब उन्हें प्राप्त हो गया। वे अप्रत्यक्ष रूप से भारत के स्वामी बन गए।

उत्तर 13. अंतर इस प्रकार हैः–

1. पुरापाषाणकाल में मनुष्य खाद्य संग्राहक तथा शिकारी था, जबकि नवपाषाण काल का मानव खाद्य उत्पादक तथा पशुपालक था।
2. पुरापाषाणकालीन औजार हथियार भद्दे, बेडौल, खुरदरे व सीमित मात्रा में थे। जबकि नवपाषाणकालीन हथियार औजार सुडौल, सुन्दर, नुकीले, चिकने, धारदार थे। ये काफी संख्या में मिलें है।
3. पुराषाणाकालीन प्रमुख भोजन– फल–फूल, कन्दमूल, पशुओं का कच्चा मांस, मछलियां। नाषाणाकाल में दूध, मांस, अनाज, फल, गेहूं, जौ, मक्का, साग–सब्जी का उपयोग होने लगा था।
4. पुराषाणकालीन मानव खाना बदोश था जबकि नवपाषाणकालीन मानव मकान बनाकर रहने लगा था।
5. पुरापाषाणकालीन मानव वृक्षो के पत्ते और पशुओं की खालों से शरीर ढंकता था। नवपाषाणकालीन मानव पौधों के रेशों, पशुओं की ऊन एवं खालों से वस्त्र बनाकर पहनने लगा था। इत्यादि।

अथवा

प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी देने वाले प्रमुख पुरातात्विक स्त्रोत हैः– अभिलेख, स्मारक व भग्नावशेष, मुद्राएं, कलाकृतियां, मृदभाण्ड। (इन स्त्रोतों का उदाहरण सहित संक्षिप्त विवरण अपेक्षित) पुरातात्विक स्त्रोतों का ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्व है। जहाँ साहित्य मौन है उपलब्ध नहीं है वहा पुरातत्व ही प्रामाणिक इतिहास उपलब्ध कराता है। इससे अनेक अप्राप्त एवं खोई हुई कड़ियों को जोड़ने में सहायता मिली है।

उत्तर 14. साम्राज्य विस्तार हेतु अलाउद्दीन को विशाल सेना की आवश्यकता थी। कम वेतन पर विशाल सेना रखी जा सकें इस हेतु उसने बाजार नियंत्रण नीति को लागू किया। जिससे सैनिक कम वेतन में जीवन निर्वाह कर सकें। अपनी नीति को सफल बनाने हेतु उसने निम्नांकित कार्य किए–

1. मूल्य नियंत्रण।
2. बाजारों का सतत निरीक्षण।
3. वस्तुओं का मूल्य निर्धारण।
4. वस्तुओं की पूर्ति व वितरण व्यवस्था।
5. कठोर दण्ड व्यवस्था।
6. सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था।

(पृथक–पृथक परिचय देना अपेक्षित।

अथवा

विजय नगर साम्राज्य का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। उसने दक्षिण भारत में हिन्दु धर्म, सभ्यता और समाज को सुरक्षित एवं पल्लवित कि। उसकी देन का निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता हैः–

1. धार्मिक सहनशीलता।

2. आर्थिक समृद्धि।
3. शिक्षा तथा साहित्य के विकास में योगदान।
4. कलात्मक उपलब्धियां आदि।
(उपरोक्त बिन्दुओं का वर्णन अपेक्षित)

उत्तर 15. दीन–ए–इलाही अकबर द्वारा चलाया गया नवीन धर्म था। अकबर धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु व जिज्ञासु प्रवृत्ति का था। अतः उसने सुलह कुल की नीति का पालन किया। दीन–ए–इलाही सभी धर्मो का सार था। इसके प्रमुख सिद्धांत थे, अनुयायियों को इनका पालन करना अनिवार्य था।

1. ईश्वर एक है।
2. सम्राट से दीक्षा लेना आवश्यक था।
3. अनुयायी सम्राट को सिजदा करेंगे।
4. सूर्य तथा अग्नि की उपासना।
5. मांस भक्षण निषेध।
6. जन्मदिन पर भोज का आयोजन।
7. श्रद्धा कर्म जीवित रहते हुए करना होता था।
8. परस्पर मिलने पर 'अल्लाह हो अकबर' व जल्ले–जलाल हू करते थे।
9. दान व उदारता का पालन अनिवार्य रूप से करना आवश्यक था।

अकबर ने दीन–ए–इलाही अपनाने के लिये किसी को विवश नहीं किया। यह धर्म जनता में प्रिय न हो सका और अकबर की मृत्यु के बाद इसका भी अंत हो गया।

अथवा

औरंगजेब की दक्षिण नीति ने उसकी धार्मिक और राजपूत नीति की तरह ही मुगल साम्राज्य की जड़ो को कमजोर किया और मुगल साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण बनी। उसकी दक्षिण नीति के निम्नांकित परिणाम हुएः–

1. मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को आघात।
2. उत्तरी भारत में अव्यवस्था।
3. मराठों का उत्कर्ष।
4. सैनिक शक्ति का ह्रास।
5. राजकोष रिक्त, इत्यादि। (वर्णन अपेक्षित)

उत्तर 16. मराठा शक्ति का उत्कर्ष किसी एक व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूह का कार्य नहीं था और न ही किसी विशेष काल में उत्पन्न अस्थाई परिस्थितियों का परिणाम था। डां. आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव के अनुसार "यह तो 200 वर्षो की उस तैयारी का स्वाभाविक परिणाम था जो सामाजिक, धार्मिक आन्दोलनों के प्रयत्नों से प्राप्त हुआ और जिसने जनता की छिपी हुई शक्ति को उभारकर उसमें नवीन जीवन और आशा का संचार कर दिया था।

सत्रहवीं शताब्दी में मराठों का उदय बहुत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थी। उनके उत्कर्ष में निम्नलिखित तत्वों का योगदान रहाः–

1. महाराष्ट्र की भौगोलिक स्थिति।
2. धार्मिक जागरण।

3. छापामार युद्ध प्रणाली।
4. दक्षिण के मुस्लिम शासकों की दुर्बलताएं।
5. भाषाई एकता।
6. सैनिक अनुभव।
7. शिवाजी का नेतृत्व। (पृथक–पृथक वर्णन अपेक्षित)

अथवा

शिवाजी एक महान राष्ट्र निर्माता, कुशल प्रशासक, महान विजेता थे। उन्होंने बिखरी हुई मराठा जाति को एकत्रित कर शून्य में सेएक राष्ट्र का निर्माण किया। उनके चरित्र व कार्यो का मूल्यांकन निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता हैः–

1. कुशल सेना नायक।
2. कुशल प्रशासक एवं संगठनकर्ता।
3. उच्चकोटि का व्यक्तित्व।
4. सफल कूटनीतिज्ञ।
5. धर्म सहिष्णु, आदि। (वर्णन अपेक्षित)

उत्तर 17. अंग्रेजो द्वारा 1757 ई. से 1857 ई. के मध्य अपनाई गई भू–राजस्व नीति उनके स्वार्थ सिद्धि का एक साधन थी, इससे भारतीय कृषक वर्ग की दशा अत्यंत दयनीय हो गई। उनके द्वारा अपनाई भू–राजस्व प्रणालियों का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार हैः–

1. ठेका प्रणाली।
2. स्थायी बन्दोबस्त।
3. रैयतवाड़ी बन्दोबस्त।
4. महालवारी बन्दोबस्त।

(उक्त प्रणालियों का पृथक–पृथक परिचय अपेक्षित है)

उक्त प्रणालियों के कारण किसानों की दशा सोचनीय हो गई, कृषि पैदावार कम तथा ग्रामीण अर्थ व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो गई। केवल कंपनी ही लाभान्वित हुई।

अथवा

पुनर्जागरण आधुनिक भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है। इसने भारतीय समाज, धर्म व विचारों में क्रान्तिकारी सुधार व परिवर्तन किये। पुनर्जागरण के निम्नलिखित कारण थेः–

1. पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति व शिक्षा का प्रभाव।
2. सुधारकों के प्रयास।
3. प्रेस, समाचार पत्रों और साहित्य का योगदान।
4. विदेशी विद्वानों द्वारा प्राचीन भारतीय संस्कृति के गौरव का ज्ञान।
5. ईसाई मिशनरियों का प्रभाव, आदि। (वर्णन अपेक्षित)

उत्तर 18. सन् 1857 ई. की क्रान्ति के स्वरूप के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ इसे सैनिक विद्रोह मात्र मानते है तो कुछ इसे भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के रूप में प्रस्तुत करते है। कुछ इतिहासकार इस विद्रोह को पश्चिमी और पूर्वी

सभ्यता का संघर्ष मानते है। ब्रिटिश इतिहासकार इसे सैनिक विप्लव मानते है। सर जॉन लारेन्स ने कहा कि ''यह एक मात्र सैनिक विप्लव था, जिसका तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस थे।'' जेम्स आउटरम, हष्टर और कूपलैण्ड ने इसे मुसलमानों का षड्यंत्र कहा है। टीस ने इसे ईसाई धर्म के विरूद्ध धर्मयुद्ध कहा है। राष्ट्रवादी इतिहास कार इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मानते है। इस मत के समर्थक हैः– अशोक मेहता, वी.डी. सावरकर, पट्टा भिसीता रमैया, डॉ. पणिक्कर आदि। उनके अनुसार यह ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध एक राष्ट्रव्यापी प्रयास था जिसे जन समर्थन प्राप्त था।

अतः विद्रोह के स्वरूप के संबंध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। सामान्यतया इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है।

अथवा

1857 का स्वतंत्रता संग्राम बड़े उत्सहपूर्ण वातावरण में प्रारंभ हुआ। आरंभ में अनेक सफलताएं भी मिली अनततः यह असफल हुआ जिसके लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हैः–

1. क्रांति का समय से पूर्व आरंभ होना।
2. योग्य नेतृत्व का अभाव।
3. विद्रोह का क्षेत्र सीमित होना।
4. संगठन का अभाव।
5. साधनों का अभाव।
6. समान लक्ष्य व आदर्श का अभाव।
7. अनुशासन का अभाव, आदि (वर्णन अपेक्षित)

उत्तर 19. मध्यप्रदेश प्राचीन गोंडवाना लैण्ड का हिस्सा था। इस भू–भाग में आदिमानवों की संस्कृति फली–फूली। आदिमानवों के जीवन की विकास यात्रा के चिन्ह यहां से बड़ी संख्या में प्राप्त हुए है। केन्द्रीय व राज्य पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा मध्यप्रदेश के विभन्न स्थलों में उत्खनन के उपरांत पाषाणयुगीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए है। ऐसे प्रमुख स्थल हैः– आदमगढ़ (होशंगाबाद), आवरा, इन्द्रगढ़ (मन्दसौर), विदिशा, उज्जैन, कायथा, एरण, डांगवाला आदि। (यहां से प्राप्त पाषाणकालीन सामग्री, कला आदि का वर्णन अपेक्षित है) अनेक शैलाश्रय व शैलचित्र भी प्राप्त हुए है जिनमें से भीमबेटका से प्राप्त शैलाश्रय व शैलचित्र विशेष महत्व के है। इनमें दैनिक जीवनचर्या के दृश्यों का अंकन है जो प्रागैतिहासिक मानव की कला प्रियता सांस्कृतिक व सामाजिक जीवन को दर्शाती है। भीमबेटका की गुफाएं पुरापाषाण तथा मध्यपाषाण संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल है। लगभग 500 गुफाएं है जिनमें शिकार दृश्य, पशुओं की लड़ाई, पशुओं की सवारी, नृत्य–गान आदि चित्रित है।

अथवा

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में म.प्र. के लोगों ने बढ़ चढ़कर भागीदारी निभाई। कांग्रेस की स्थापना से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक म.प्र. का राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा। गांधी जी द्वारा संचालित असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आन्दोलन में मध्यप्रदेश के लोगों ने भाग लिया। इसके साथ क्रांतिकारी गतिविधियों में भी यहां के लोगों ने सक्रिय भूमिका निभाई।

कण्डेल नहर सत्याग्रह, झण्डा सत्याग्रह, शस्त्र सत्याग्रह उल्लेखनीय है। (उपरोक्त सभी आंदोलन के दौरान मध्यप्रदेश में घटी घटनाओं और संबंधित व्यक्तियों का उल्लेख आवश्यक)

उत्तर 20. आधुनिक भारतीय इतिहास के निर्माण हेतु प्रचुर मात्रा में साहित्यिक व पुरातात्विक सामग्री विद्यमान है जिससे आधुनिक भारत का प्रामाणिक इतिहास ज्ञात होता हैं। आधुनिक भारतीय इतिहास जानने के साहित्यिक स्त्रोंत निम्नानुसार हैः–

1. समाचार पत्र, पत्रिकाएं।
2. कम्पनी के दस्तावेज और अभिलेखीय सामग्री।
3. समकालीन ग्रन्थ।
4. निजी दस्तावेज।
5. ब्रिटिश इतिहासकारों के ग्रंथ और विवरण आदि।

(उपरोक्त स्त्रोंतो का पृथक–पृथक विस्तृत विवरण देना आवश्यक)

अथवा

ब्रिटिश कम्पनी के लिए बक्सर के युद्ध का महत्व प्लासी के युद्ध से अधिक है। प्लासी के युद्ध से उन्हें बंगाल, बिहार, उड़ीसा का अप्रत्यक्ष स्वामित्व दिया तो बक्सर के युद्ध ने उन्हें अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण भारत का दायित्व सौंप दिया। मुगल सम्राट और अवध का नवाब उनकी दया पर निर्भर थे। कम्पनी की प्रतिष्ठा की धाक जम गई। बंगाल का नवाब उनके हाथों की कठपुतली बनकर रह गया। प्लासी का युद्ध छल कपट से जीता गया था किन्तु बक्सर के युद्ध ने उनकी सैनिक श्रेष्ठता को सिद्ध किया। प्लासी के युद्ध ने अंग्रेजो को भारत में पैर जमाने का मौका दिया तो बक्सर के युद्ध के बाद वे स्थिति के स्वामी बन गए। उनके भारत में विस्तार का द्वार खुल गया। इस युद्ध के बाद कम्पनी व्यापरिक संस्था सेएक राजनीतिक संस्था भी बन गई। (और अधिक विवरण अपेक्षित है)

उत्तर 21. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवादी विचारधारा के उदय के निम्नलिखित कारण थेः–

1. आर्थिक शोषण।
2. बंगाल विभाजन।
3. नरम दल के प्रयत्नों की असफलता।
4. लार्ड कर्जन के कार्य।
5. अकाल व प्लेग।
6. शिक्षित भारतीयों की उपेक्षा।
7. विश्व में घटित घटनाओं का प्रभाव, इत्यादि।

(पृथ–पृथक वर्णन आवश्यक है)

अथवा

ब्रिटिश सरकार के रवैये से नाराज गांधीजी ने असहयोग आन्दोल चलाने का निश्चय किया। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य था ब्रिटिश सरकार की ऐसी

नीतियों के साथ असहयोग करना जो भारत के हित में न हों। इस आन्दोलन के कार्यक्रम दो भागों में बंटे थे:—

रचनात्मक व नकारात्मक

रचनात्मक कार्यक्रमों में थे — राष्ट्रीय विद्यालयों, महाविद्यालयों की स्थापना, अस्पृश्यता का अन्त, हिन्दू मुस्लिम एकता हेतु प्रयास, स्वदेशी का प्रसार, स्वराजकोष की स्थापना, चरखों का वितरण आदि।

नकारात्मक कार्यक्रमों में थे — सरकारी स्कूल, कॉलेज, अदालतों, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, सरकारी उपाधि व पदवियों का त्याग, सरकारी उत्सवों समारोहों का बहिष्कार, समस्त विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, अवैतनिक पदों का त्याग।

असहयोग आन्दोलन गांधी जी द्वारा अगस्त 1921 ई. में प्रारम्भ कर दिया गया था। यह आन्दोलन सफलता की ओर अग्रसर था कि चौरी—चौरा की हिंसक घटना से जिसमें 5 फरवरी 1922 को 22 पुलिस जवानों को थाने के अन्दर जिंदा जला दिया गया था से दुखी होकर गांधीजी ने इस आन्दोलन को बन्द करने की घोषणा की और अन्ततः 12 फरवरी 1922 को इसको स्थिगित कर दिया गया।

———————————